

इमाम अबू हनीफा (रहिमहुल्लाह) का अक्रीदा

इमाम अबू हनीफा (रहिमहुल्लाह) का अक्रीदा

सबसे पहले अल्लाह तआला की तौहीद, शरअी तवस्सुल के बयान और बिद्अी तवस्सुल के इब्ताल के बारे में उन का अक्रीदा :

1. अबू हनीफा(रहिमहुल्लाह) ने कहा : “किसी के लिए दुरूस्त नहीं कि वह अल्लाह से दुआ करे मगर उसी के वास्ते से , और जिस दुआ की इजाजत है और जिस का हुक्म है वह वही है जो अल्लाह तआला के इस इरशाद से मिलता है :

” और अल्लाह तआला के अच्छे नाम हैं, इसलिए उसे उन्हीं से पुकारो, और उन लोगों को छोड़ दो जो इस के नामों में इल्हाद करते हैं, उन्हें जो कुछ वह करते रहे हैं उस का जल्द ही बदला दिया जाएगा।” (सूरह आराफ, आयत-180) [अल्-दर्ल मुख्तार,हाशिया रदूल मुहतार,2/396-397]

अबू हनीफा (रहिमहुल्लाह) ने फरमाया : “यह मकरूह है कि दुआ करने वाला यूँ कहे कि मैं फलाँ के हक़ से , या नबी के हक़ से या रसूल के हक़ से,या बैतुल् हराम के हक़ से या मशअर हराम तुझ से सवाल करता हूँ।”[शरह अल्-अक्रीदा अल् तहाविया, सफा-234]

और अबू हनीफा (रहिमहुल्लाह) ने फरमाया : “किसी के लिए दुरूस्त नहीं कि वह अल्लाह तआला से दुआ करे मगर उसी के वास्ते से, और मैं ये भी मकरूह समझता हूँ कि दुआ करने वाला यूँ कहे कि तेरे अर्श की इज्जत की बन्दिशगाह के वास्ते से,[नोट-इमाम अबू हनीफा और इमाम मुहम्मद ने ये बात मकरूह करार दी है कि आदमी अपनी दुआ में ये कहे कि “ऐ अल्लाह ! मैं तेरे अर्श की इज्जत की बन्दिशगाह के वास्ते से सवाल करता हूँ” क्योंकि इस की इजाजत के बारे में कोई दलील नहीं है, अलबत्ता अबू यूसूफ ने इस को जायज़ कहा है, क्योंकि उन्हें सुन्नत से इस की दलील मिल गयी थी, जिस में ये है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दुआ ये थी : “ऐ अल्लाह ! मैं तुझ से तेरे अर्श की इज्जत की बन्दिशगाहों और तेरे किताब की मुन्तहा-ए-रहमत(रहमत की इन्तिहा) के वास्ते से सवाल करता हूँ” इस हदीस को ब्रहक्री ने किताबुल् दअ्वात अल् कबीर में रिवायत किया है, जैसा कि अल्-बिनाया 1382/9 और नसब अल् रायाह 272/4 में है , मगर इस की सनद में तीन खामियाँ हैं

1. दाऊद बिन आसिम ने इब्न मसऊद से नहीं सुना है,2.अब्दुल मालिक बिन जुर्जैज मुदल्लीस है और इर्साल करता है,3.उमर बिन हारून पर झूठ बोलने का इल्जाम है,इसीलिए इब्न जौज़ी ने कहा है, जैसा कि अल्-बिनाया 9/382 में है कि ये हदीस बिलाशुबा मौजूअ है और इस की सनद बेकार है,जैसा कि तुम देख रहे हो, देखिए तहज़ीब अल्-तहज़ीब 3/189,6/405,7/105 तक़रीब अल्-तहज़ीब 1/520]”

या तेरी मखलुक के हक़ से।[अत्-तव्वसुल वल् वसीला सफा-189 और देखिए शरह अल्-फिक्रह-अल् अकबर, 198]

सिफात के इस्वात और जहमिया के रद्द में उनका कौल :

4. और उन्होंने कहा कि अल्लाह तआला को मखलुक़ीन की सिफात से मुत्तसीफ नहीं किया जा सकता, इसका गज़ब और इसकी रज़ा बिला कैफ उसकी सिफात में दो सिफतें हैं, और यही अहले सुन्नत वल् जमात का क़ौल है, वह गज़बनाक होता और राज़ी होता है, लेकिन ये नहीं कहा जाएगा कि उसका गज़ब उसकी तरफ से सज़ा है, और उसकी रज़ा उसका सवाब है, और हम उसको वैसे ही मुत्तसीफ करेंगे जैसे उस ने अपने आप को मुत्तसीफ किया है, वह एक है, बे नियाज़ है, न उसने जना है और न वह जना गया है, और न उसका कोई हमसर है, वह जिन्दा है, कादिर है, सुनने वाला है, देखने वाला है, आलिम है, अल्लाह का हाथ उन के हाथों के ऊपर है, और उसकी मखलुक के हाँथ जैसा नहीं, और उसका चेहरा उसकी मखलुक के चेहरे जैसा नहीं है। [फिक्ह अल्-अबसत्, सफा-56]
5. और कहा कि : “उस के लिए हाथ और चेहरा और नफ्स है, जैसा कि अल्लाह ने उसे कुरआन में जिक्र किया है, और जिस चीज़ को अल्लाह ने कुरआन में जिक्र किया है, यानि चेहरा और हाथ और नफ्स का जिक्र तो वह बिला कैफ उसकी सिफात हैं, और ये नहीं कहा जाएगा कि उस का हाथ उसकी कुव्वत या नेमत है, क्योंकि उस में सिफत का इन्कार है, और ये मुन्करीन तकदीर और मुअ्तज़िला का क़ौल है। [फिक्ह अल्-अबसत्, सफा-302]”
6. और कहा कि : “किसी के लिए दुरुस्त नहीं है कि अल्लाह की ज़ात के बारे में कुछ भी बोले, बल्कि उसको उसी खुशुसियत से मुत्तसीफ करे जिस से उस ने अपने आप को मुत्तसिफ किया है, और उस के बारे में अपनी राय से कुछ न कहे, अल्लाह रब्ब अल् आलमीन् बाबरकत और बुलन्दतर है।” [शरह अल्-अक़ीदा अल्-तहाविया 2/427, तहक़ीक़ डा. अब्दुल्लाह तुर्की, जलालैन, 368]
7. और जब नज़ूल इलाही के बारे में उन से पूछा गया तो उन्होंने कहा, “वह बिला कैफ नाज़िल होता है।” [अक़ीदा अल्-सलफ अस्हाब अल्-हदीस सफा-42, दारूल सलफिया प्रेस, अल् अस्माअ् वल् सिफात बैहक़ी स-456, कोसरी ने इस पर सकूत इख्तियार किया है और शरह अल्-अक़ीदा अल्-तहाविया सफा-245, तख़रीज अलबानी, अल्-फिक्ह-अल् अकबर लिल् क़ारी, सफा-40]
8. इमाम अबू हनीफा ने कहा : “अल्लाह तआला ऊपर की जानिब (तवज्जो करके) पुकारा जाएगा, नीचे से नहीं, क्योंकि नीचे होना रबूबियत और उलुहियत के खुशुसियत मे से कोई तालुक नहीं रखता।” [अल्-फिक्ह अल्-अबसत्, सफा-51]
9. और कहा कि : “वह गुस्सा होता है और राज़ी होता है मगर ये नहीं कहा जाएगा कि उसका गुस्सा उसकी तरफ से सज़ा है, और उसकी रज़ा उसका सवाब है।” [फिक्ह अल्-अबसत्, सफा-56, किताब के मुहक़िक़ कोसरी ने इस पर सकूत इख्तियार किया है।]
10. और कहा कि : “वह अपनी मखलुक़ की चीज़ों में से किसी भी चीज़ के मुशाबे नहीं, और अपनी मखलुक़ के भी मुशाबे नहीं, वह अपने नामों और सिफात के साथ हमेशा से था और हमेशा रहेगा।” अल्-फिक्ह-अल् अकबर, सफा-301]
11. और कहा कि : “उसकी सिफात मखलुक़ की सिफात के बर ख़िलाफ हैं, जानता है मगर हमारे जानने की तरह नहीं, वह कुदरत रखता है मगर हमारे कुदरत रखने की तरह नहीं, वह देखता है मगर हमारे देखने की तरह नहीं, सुनता है मगर हमारे सुनने की तरह नहीं, वह बोलता है मगर हमारे बोलने की तरह नहीं” [अल्-फिक्ह-अल् अकबर, सफा-302]

- 12.और कहा कि : “अल्लाह तआला को मखलुक़ीन की सिफात के साथ मुत्तसिफ नहीं किया जाएगा”
[[अल्-फिक्रह अल्-अबसत्, सफा-56]
- 13.और कहा कि : “जिस ने अल्लाह को बशर के मानों में किसी माना के साथ मत्तसिफ किया उसने कुफ्र किया” [अक़ीदतुल् तहाविया, तअलीक़ अल्-अलबानी, सफा-25]
- 14.और कहा कि : “अल्लाह की जाती और फअली सिफत हैं, जाती सिफात हयात, कुदरत, इल्म,कलाम, समअ्, बसर और इरादा हैं । और फअली सिफात ये हैं : पैदा करना,रोज़ी देना,मौजूद करना, बगैर साबिका नमुना के किसी चीज़ को वजूद में लाना, बनाना और दीगर सिफात फअल,और वह अपने अस्माअ् व सिफात के साथ हमेशा से है और हमेशा रहेगा” [अल्-फिक्रह-अल् अकबर,सफा-301]
- 15 और कहा कि : “वह अपने फअल के हमेशा से करने वाला रहा है, और फअल अजली सिफत है, और फाएल अल्लाह तआला है, और फअल् अजली सिफत है, और मफअूल मखलुक़ है, और अल्लाह तआला का फअल मखलुक़ नहीं है।” अल्-फिक्रह-अल् अकबर,सफा-301]
- 16.और कहा कि : “जो शख्स यह कहे कि मैं अपने रब्ब के बारे में नहीं जानता कि वह आसमान में है या ज़मीन में, उस ने कुफ्र किया, और ऐसे ही वह शख्स भी जो ये कहे कि वह अर्श पर है लेकिन मैं ये नहीं जानता कि अर्ज आसमान में है या ज़मीन में।” [[अल्-फिक्रह अल्-अबसत्,सफा-46, और इसी के मिस्ल शैखुल इस्लाम इब्न तैमिया ने मजमूअ् अल्-फतावा 48/5 में, इब्न कैय्यिम ने इज्जतमाअ् अल्-जैयुश अल्-इस्लामिया, सफा-139 में,ज़हबी ने अल्-उलुव्व,सफा-101,102 में,इब्न कुदामा ने अल्-उलुव्व, सफा-116 में, और इब्न अबी अल्-इज़्ज़ ने अल्-तहाविया सफा-301 में नक़ल किया है।]
- 17.और एक औरत ने उन से पूछा कि जिस रब की आप इबादत करते हैं वह कहाँ है ? तो उन्होंने कहा कि “अल्लाह सुब्हानहु व तआला ज़मीन में नहीं आसमान में है, इस पर उन से एक आदमी ने कहा कि तो अल्लाह का ये क़ौल कि “व हुव मअकुम(वह तुम्हारे साथ है)“[सूरह अल्-हदीद,आयत-4]”तो उन्होंने कहा कि वह ऐसे ही है जैसे तुम किसी आदमी को लिखते हो कि मैं तुम्हारे साथ हूँ, हालांकि तुम उस से गायब होते हो।” [अल्-अस्माअ् वल्सि फात,सफा-429]
- 18.और कहा कि : “इसी तरह अल्लाह का हाथ उन के हाथ के ऊपर है,लेकिन उसकी मखलुक़ के हाथों की तरह नहीं है।” [अल्-फिक्रह अल्-अबसत्,सफा-56]
19. और कहा कि : “बेशक़ अल्लाह सुब्हानहु व तआला ज़मीन में नहीं,आसमान में है,इस पर उनसे एक आदमी ने कहा कि तो अल्लाह का जो क़ौल है कि : “व हुव मअकुम”(वह तुम्हारे साथ है।) तो उन्होंने फरमाया कि वह ऐसे ही है जैसे तुम किसी आदमी को लिखते हो कि मैं तुम्हारे साथ हों, हालांकि तुम उस से गायब होते हो।” [अल्-अस्माअ् वल् सिफात्,170/2]
- 20.और कहा कि : “अल्लाह तआला ने मुसा अलैहिस्सलाम से कलाम नहीं किया था तब भी वह मुत्कलिम था” [अल्-फिक्रह अल्-अकबर, सफा-302]
21. और कहा कि : “वह अपने कलाम के साथ मुत्कलिम था और कलाम उसकी अजली सिफत है।” [अल्-फिक्रह अल्-अकबर, सफा-301]
- 22.और कहा कि : “वह कलाम करता है,मगर हमारे कलाम की तरह नहीं।” [अल्-फिक्रह अल्-अकबर, सफा-302]
- 23.और कहा कि : “मूसा अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला का कलाम सुना जैसा कि अल्लाह तआला ने फरमाया : “व कल्लमल्लाहु मूसा तकलीमा(और अल्लाह तआला ने मूसा से कलाम किया) [सूरह

निसा,आयत-164]”और उस ने जब मूसा अलैहिस्सलाम से कलाम नहीं किया था तब भी मुतकल्लिम था।” [अल्-फिक्रह अल्-अकबर, सफा-302]

24.और कहा कि : “कुरआन अल्लाह का कलाम है, मुसाहिफ में लिखा हुआ है, दिलों में महफुज है, जबानों से पढ़ा जाता है,और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर नाज़िल किया गया है।” [अल्-फिक्रह अल्-अकबर, सफा-301]

25.और कहा कि : “कुरआन गौर मखलुक है।” [अल्-फिक्रह अल्-अकबर, सफा-302]

तकदीर के बारे में इमाम अबू हनीफा के अक़वाल :

1. एक आदमी इमाम अबू हनीफा के पास आकर तकदीर के बारे में उन से मूजादिला करने लगा, उन्होंने कहा : “तुम को मालूम नहीं कि तकदीर में गौर व खोज करने वाला ऐसे ही है जैसे को ई सूरज की आँखों में नज़र कर रहा हो, वह

जिस क़दर ज्यादा नज़र करेगा उस की हैरत ज्यादा होगी” [क़लाएद अकूद अल्-अक़बान, वर्क-77 ब]

2. इमाम अबू हनीफा कहते हैं : “अल्लाह तआला अज़ल में अश्या को उन के होने से पहले जानता था” [अल्-फिक्रह अल्-अकबर, सफा-302-303]

3.और कहा कि : “अल्लाह तआला मअदूम को उसके अदम की हालत में बहैसियत मअदूम जानता है,और ये भी जानता है कि जब वह उसको मौजूद करेगा तो कैसे होगा,और अल्लाह तआला मौजूद को उस के वजूद की हालत में मौजूद जानता है।,और ये भी जानता है कि उसका फना कैसे होगा।” [अल्-फिक्रह अल्-अकबर, सफा-302-303]

4.और इमाम अबू हनीफा कहते हैं कि : “उस की (मुकर्रह) तकदीर लौह महफूज में है।” [अल्-फिक्रह अल्-अकबर, सफा-302]

5.और कहा कि : “हम इकरार करते हैं कि अल्लाह तआला ने क़लम को हुक्म दिया कि वह लिखे, क़लम ने कहा : “ऐ रब्ब !मैं क्या लिखूँ ? अल्लाह तआला ने कहा : क्रियामत तक जो होने कुछ होने वाला है वह सब लिख,क्योंकि अल्लाह तआला का इरशाद है : “और हर चीज़ जो उन्होंने की है सहीफों के अन्दर है, और हर छोटी बड़ी चीज़ लिखी हुई है” [अल्-क़मर,आयत-52-53]” [अल्-वसियत् मअ शरह,सफा-21]

6.और इमाम अबू हनीफा ने कहा : “दुनिया और आखिरत में कोई भी चीज़ अल्लाह की मर्ज़ी के बग़ैर नहीं होगी।” [अल्-फिक्रह अल्-अकबर, सफा-302]

7. और इमाम अबू हनीफा ने कहा कि : “अल्लाह ने चीज़ें बग़ैर किसी चीज़ के पैदा कीं” [अल्-फिक्रह अल्-अकबर, सफा-302]

8. और कहा कि : “अल्लाह तआला पैदा करने से पहले भी खालिक़ था।” [अल्-फिक्रह अल्-अकबर, सफा-304]

9.और कहा कि : “हम इकरार करते हैं कि बन्दा अपने आमाल, इकरार और मअरफत् के साथ मखलुक़ है,चुनांचे जब फाएल मखलुक़ है तो उस के अफ़आल बदर्जा उला मखलुक़ हैं।” [अल्-वसियत् मअ शरहां,सफा-14]

10. और कहा कि : “हरकत व सकून व गौरह बन्दों के तमाम अफ़आल उन का कसब हैं,और अल्लाह तआला उन का खालिक़ है,और ये कुल के कुल उसके मशिअत्, उसके इल्म,उसके फैसले और उसकी तकदीर से हैं।” [अल्-फिक्रह अल्-अकबर, सफा-303]

11.और इमाम अबू हनीफा(रहिमहुल्लाह) ने कहा : “हरकत व सकून वगैरह बन्दों के तमाम अफ्आल हकीकत उनका कसब हैं,और अल्लाह तआला ने उन्हें पैदा किया है, और ये कुल के कुल अल्लाह तआला की मशिअत्,उसके इल्म,उस के फैसले और उस की तक्रदीर से हैं, उस के फैसले और उसकी तक्रदीर से वाजिब थें।और मआसी कुल की कुल अल्लाह के इल्म,उसके फैसले और उसकी तक्रदीर और उसकी मर्जी से हैं लेकिन उसकी पसन्द,उसकी रजा और उसके हुक्म से नहीं हैं।” [अल्-फिक्रह अल्-अकबर, सफा-303]

12.और कहा कि : “अल्लाह तआला ने मखलुक के कुफ्र और ईमान से सालिम पैदा किया(नोट-सहीह यह है कि अल्लाह ने मखलुक को फितरत-ए-इस्लाम पर पैदा किया,जैसा कि खूद अबू हनीफा अपने आगे के क़ौल में बयान कर रहे हैं।) फिर उन्हें मुखातिब किया और हुक्म दिया और मना किया, फिर जिस ने कुफ्र किया उस ने अपने फेल और इन्कार और हक़ को न मानने के सबब अल्लाह तआला की तरफ से बे तौफिकी के नतीजे में कुफ्र किया, और जो ईमान लाया वह अपने फेल और इकरार और तस्दीक के सबब अल्लाह तआला की तौफीक और उसकी नुसरत से ईमान ले आया।” [अल्-फिक्रह अल्-अकबर, सफा-302-303]

13. और कहा कि : “उस ने आदम की जुरियत् को उनकी पूस्त से चिंटियों की सूरत में निकाला और उन्हें अक़लमन्द बनाया, फिर उनको मुखातिब किया,और उन्हें ईमान का हुक्म दिया, और कुफ्र से मना किया,उस पर उन्होंने अल्लाह की रूबूबियत का इकरार किया,चुनांचे ये उन की तरफ से ईमान था,और वह उसी फितरत पर पैदा किए जाते हैं,अब जो कुफ्र करता है तो उसके बाद कुफ्र करता है और तगैय्युर व तब्दीली करता है और जो ईमान लाता और तस्दीक करता है तो वह उस पर साबित और बरकरार रहता है।” [अल्-फिक्रह अल्-अकबर, सफा-302]

14.और कहा कि : “वही है जिस ने चीजें मुक़द्दर कीं और उनका फैसला किया,और दुनिया और आखिरत में कोई भी चीज उसकी मर्जी,उसके इल्म,उसके फैसले और उसकी तक्रदीर के बगैर नहीं होती,और उसे उस ने लौह-ए-महफूज़ में लिख रखा है।” [अल्-फिक्रह अल्-अकबर, सफा-302]

15.और कहा कि : “उस ने अपनी मखलुक में से किसी को कुफ्र या ईमान पर मजबूर नहीं किया है,बल्कि उन्हें इश्खास पैदा किया है, और ईमान और कुफ्र बन्दों का फेल है,और जो कुफ्र करता है अल्लाह तआला उसको हालत-ए-कुफ्र में काफिर जानता है,फिर उसके बाद जब वह ईमान लाता है तो जब उसको मोमिन जानता है तो उस से मुहब्बत करता है,मगर उस के बगैर कि उस के इल्म में कोई तब्दीली हो” [अल्-फिक्रह अल्-अकबर, सफा-303]

ईमान के बारे में इमाम अबू हनीफा रहिमहुल्लाह का क़ौल

1. और कहा कि : “ईमान इकरार और तस्दीक है।” [अल्-फिक्रह अल्-अकबर,सफा-304]

2.और कहा कि : “ईमान,ज़बान से इकरार और दिल से तस्दीक है, तन्हा इकरार ईमान नहीं।” [किताब अल्-वसिया मअ्-शरह,सफा-2] उसे तहावी ने अबू हनीफा और साहबैन रहिमहुल्लाह अजमईन से नक़ल किया है। [अल्-तहाविया मअ्-शरह,सफा-360]

3.और अबू हनीफा रहिमहुल्लाह ने कहा कि : “ईमान न ज्यादा होता है न कम होता है।” [किताब अल्-वसिया मअ्-शरह,सफा-3]

मैं कहता हूँ कि उन्होंने ईमान के ज्यादा और कम न होने की जो बात कही है और ईमान के मसमा के बारे में जो बात कही है कि वह दिल की तस्दीक और ज़बान का इकरार है, और अमल हकीकत में ईमान से

खारिज है। तो उनकी यही बात ईमान के बारे में इमाम अबू हनीफा रहिमहुल्लाह के अक्रीदे और बक्रिया तमाम आइमा इस्लाम मसलन् मालिक, शाफओ, अहमद, इसहाक, बुखारी वगैरह रहिमहुल्लाह अजमईन के अक्रीदे के दर्मियान वाजेह फर्क है, और हक उन्हीं आइमा के साथ, और अबू हनीफा रहिमहुल्लाह का कौल हक से अलग थलग है, लेकिन दोनों हालतों में उन्हें अज्र है, और इब्न अब्दुल बर और इब्न अबी अल्-इज्ज ने कुछ ऐसी बात जिक्र की है जिस से पता चलता है कि इमाम अबू हनीफा रहिमहुल्लाह ने अपने कौल से रूजू कर लिया था। और अल्लाह तआला ही बेहतर इल्म वाला है। [अल्-तमहीद इब्न अब्दुल बर 742/9, शरह अल्-अक्रीदा अल्-तहाविया, सफा-395]

सहाबा के बारे में इमाम अबू हनीफा का कौल :

1. इमाम अबू हनीफा ने कहा : “हम सहाबा रसूल ((सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) में से किसी को भी जिक्र नहीं करते मगर खैर ही के साथ” [अल्-फिक्रह अल्-अकबर, सफा-404]
2. और कहा : “हम सहाबा रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) में से किसी से भी बराअत् इस्तियार नहीं करते, और किसी को छोड़ कर किसी से दोस्ती नहीं करते” [[अल्-फिक्रह अल्-अबसत्, सफा-40]
3. और कहा कि : “रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के साथ उन में से किसी एक का एक साअत के लिए क्रियाम, हम में से एक की तमाम उमर के अमल से बेहतर है, चाहे वह उमर लम्बी ही क्यों न हों” [मनाक़िब अबी हनीफा अज्-मक्की, सफा-26]
4. और कहा कि : “हम इकरार करते हैं कि हमारे नबी मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के बाद इस उम्मत में सब से अफजल अबू बक्र सिदीक रजियल्लाहु अन्हु, फिर उमर रजियल्लाहु अन्हु, फिर उस्मान रजियल्लाहु अन्हु हैं फिर अली रजियल्लाहु अन्हु हैं, उन सब पर अल्लाह की रजा हो।” [अल्-वसिया मअ्-शरह सफा-14]
5. और कहा कि : “रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के बाद सब से अफजल अबू बकर और उमर और उस्मान और अली रजियल्लाहु अन्हुम हैं, इस के बाद हम रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के तमाम अस्थाब से रूक जाते हैं, और सिर्फ अच्छाई के साथ जिक्र करते हैं” [अल्-नूर अल्-ला, मअ्(वरका-119-ब) में उन से मज़कूर है।]

दीन में कलाम व खसूमात से उन की ममानिअत् :

1. इमाम अबू हनीफा रहिमहुल्लाह ने कहा : “बसरा में गुमराह (अक्रीदा) वाले बहुत हैं, मैं वहाँ बीस से ज्यादा मर्तबा गया, और बसा औकात ये समझ कर एक साल या उस से कुछ कम या ज्यादा ठहरा रहा कि इल्म कलाम बड़ा जलील इल्म है।” [मनाक़िब अबि हनीफा लिल् कुर्दी, सफा-137]
2. और कहा कि : “मैं इल्म कलाम में नज़र रखता था, यहाँ तक कि इस दर्जे को पहुँच गया कि इस फन में मेरी, उंगलियों से इशारे किए जाने लगे, और हम हमाद बिन अबी सुलैमान के हलके के करीब बैठा करते थे, एक दिन मेरे पास एक औरत ने आकर कहा कि एक आदमी है, उसकी एक बीवी है जो लौण्डी है, वह उसे सुन्नत के मुताबिक तलाक देना चाहता है, कितनी तलाक दे ? मूझे समझ में न आया कि मैं क्या कहूँ, मैंने उसे हुक्म दिया कि वह हमाद से पूछे, फिर पलट कर आए और मूझे बताए, उस ने हमाद से पूछा, हमाद ने कहा : ‘उसे हैज और जमाअ से पाकी की हालत में एक तलाक दे, फिर उसे छोड़ रखे यहाँ तक कि उसे दो हैज आ जाएँ, फिर जब वह गुस्ल कर ले तो निकाह करने वालों के लिए हलाल हो गयी’, उसने वापिस आकर मूझे खबर दी, मैंने कहा : ‘मूझे इल्म कलाम की कोई ज़रूरत नहीं, मैंने अपना

जूता लिया और हमदा के पास आ बैठा।” [तारीख बगदाद, 333/13]

3. और वह कहते हैं कि : “अल्लाह अम्रो बिन उबैद पर लानत करे, क्योंकि इल्म कलाम में जो चीज मुफीद नहीं उसकी बाबत गुफ्तुगू का दरवाजा उसी शख्स ने खोला है।” [ज़म्म अल्-कलाम लिल् हरवी, 28-31]

और उनसे एक आदमी ने पूछा और कहा कि अरज़ व जिस्म के मुतल्लिक गुफ्तुगू के बारे में लोगों ने जो कुछ इजाद कर लिया है उस के बारे में आप क्या कहते हैं? उन्होंने कहा : “वह तो फलसफियों के मक़ालात हैं, तुम असर व तरीक़ सलफ को लाज़िम पकड़ो, और अपने आप को हर इजाद करदा चीज़ से बचाओ, क्योंकि वह बिद्अत् है।” [ज़म्म अल्-कलाम लिल् हरवी, 194/ब]

4. हमदा बिन अबी हनीफा कहते हैं कि एक दिन मेरे पास मेरे वालिद रहिमहुल्लाह दाखिल हुए, और मेरे पास अहले कलाम की एक जमात थी, और हम एक बाब में बहस कर रहे थे, और हमारी आवाज़ें ऊँची हो गयी थी, जब मैंने घर में उन की आहट सूनी तो उन की जानिब निकला, उन्होंने कहा : ऐ हमदा ! तुम्हारे पास कौन हैं ? मैंने कहा : ‘फलां, फलां और फलां, मेरे पास जो लोग थे मैंने उनका नाम लिया, उन्होंने कहा : ऐ हमदा, इल्म कलाम छोड़ दो ।, (हमदा कहते हैं) मैंने अपने बाप को कभी खलत-मलत करने वाला नहीं पाया था, और न उन में से पाया था जो किसी बात का हुक्म देते हों, फिर उस से मना करते हों, इसलिए मैंने उन से कहा : ‘अब्बा जान ! क्या आप मूझे इस का हुक्म नहीं दिया करते थे ?, उन्होंने कहा : ‘बेटे ! क्यों नहीं, लेकिन आज तुम को इस से मना करता हूँ, मैंने कहा : क्यों ?’ उन्होंने कहा : ऐ बेटे ! ये लोग जो इल्म कलाम के अबवाब में इस्तिलाफ किये बैठे हैं, जिन्हें तुम देख रहे हो, ये एक ही क़ौल और एक ही दीन पर थे, यहाँ तक कि शैतान ने उनके दर्मियान कचुका मारा, और उन में अदावत व इस्तिलाफ डाल दिया, और वह एक दूसरे से अलग हो गए।’ [मनाक़िब अबी हनीफा लिल् मक्की, सफा-183-184]

5. अबू हनीफा रहिमहुल्लाह ने अबू युसूफ रहिमहुल्लाह से कहा : “तुम उसूल-ए-दीन यानि कलाम के बारे में आम लोगों से गुफ्तुगू करने से बच कर रहना, क्योंकि ये लोग तुम्हारी तकलीद करेंगे, और इसी में फंस जाएंगे।” [मनाक़िब अबी हनीफा लिल् मक्की, 373]

उसूल-ए-दीन के मसायल में इन रहिमहुल्लाह का जो अक़ीदा था और इल्म कलाम और मुतकल्लिमीन के बारे में उन का जो मुवक्क़फ था, उन के बारे में मौसूफ के अक़वाल का ये एक मजमूअ है।

और अल्लाह तआला ही बेहतर इल्म वाला है।

[स्रोत : आइमा अरबा-डा. मुहम्मद बिन अब्दुर्रहमान अल् खमीस]